आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 19-05-2016 ● अंक- 529 ● तारीख - 20 मई 2016, वैशाख शुक्ल -14 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

धन

धन को रक्त के समान अमूल्य तथा ईश्वर का उपहार मानो। धर्म तथा सत्य द्वारा धन अर्जित करो। इसका प्रेम तथा शांति के विस्तार में प्रयोग करो।

–श्री सत्य सांई बाबा

अनमोल वचन

1.मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कद्र नहीं करता, वह हमेश उस चीज की आस लगाये रहता है जो उसके पास नहीं है। –हेलेन कलर की किताब ''स्टोरी आफ लाइफ''

2.जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही व्यक्ति उच्च शिखर पर पहुंचते हैं।

3.आत्मविश्वास सफलता का प्रमुख रहस्य है। –इमर्सन

4.आत्मविश्वासी कभी हारता नहीं, कभी थकता नहीं, कभी गिरता नहीं और कभी मरता नहीं।

5.जब तक आत्मविश्वास रूपी सेनापति आगे नहीं बढ़ता तब तक सब शक्तियाँ चुपचाप खड़ी उसका मुँह ताकती रहती हैं।

भारत में लैंड हुआ दुनिया का सबसे बड़ा कार्गो प्लेन, ले जा सकता है 10 बड़े टैंक

नई दिल्ली. यूक्रेन में बना दुनिया का सबसे बड़ा कार्गो प्लेन ''एंटोनोवएन–225 मिरिया'' शुक्रवार रात हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट में लैंड हुआ। ये प्लेन तुर्कमेनिस्तान से होता हुआ भारत आया है। बता दें कि ये कार्गो प्लेन अपनी पहली कॉमर्शियल फ्लाइट के लिए मंगलवार को कीव से रवाना हुआ था।

भगवान का कच्छप अवतार

वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन कूर्म जयंती का पर्व मनाया जाता है। धर्म ग्रंथों के अनुसार इसी तिथि को भगवान विष्णु ने कूर्म (कछुए) का अवतार लिया था तथा समुद्र मंथन में सहायता की थी। भगवान विष्णु के कूर्म अवतार को कच्छप अवतार भी कहते हैं। इस बार कूर्म जयंती 21 मई, शनिवार को है।

एक बार महर्षि दुर्वासा ने देवताओं के राजा इंद्र को श्राप देकर श्रीहीन कर दिया। इंद्र जब भगवान विष्णु के पास गए तो उन्होंने समुद्र मंथन करने के लिए कहा। तब इंद्र भगवान विष्णु के कहे अनुसार दैत्यों व देवताओं के साथ मिलकर समुद्र मंथन करने के लिए तैयार हो गए। समुद्र मंथन करने के लिए मंदराचल पर्वत को मथनी एवं नागराज वासुकि को नेती बनाया गया।

देवताओं और दैत्यों ने अपना मतभेद भुलाकर मंदराचल को उखाड़ा और उसे समुद्र की ओर ले चले, लेकिन वे उसे अधिक दूर तक नहीं ले जा सके। तब भगवान विष्णु ने मंदराचल को समुद्र तट पर रख दिया। देवता और दैत्यों ने मंदराचल को समुद्र में डालकर नागराज वासुकि को नेती बनाया।

किंतु मंदराचल के नीचे कोई आधार नहीं होने के कारण वह समुद्र में डूबने लगा। यह देखकर भगवान विष्णु विशाल कूर्म (कछुए) का रूप धारण कर समुद्र में मंदराचल के आधार बन गए। भगवान कूर्म की विशाल पीठ पर मंदराचल तेजी से घूमने लगा और इस प्रकार समुद्र मंथन संपन्न हुआ।

जिंदगी में भरें, खुशियों के रंग

कहीं आप उन लोगों में तो शामिल नहीं, जो सिर्फ अपने लिए जीते हैं। जरा सा दूसरों की जिंदगी में भी खुशियों के रंग घोलकर तो देखें। आपका जीवन और सुख मय हो जाएगा।

– अगर घर में बुजुर्ग सदस्य हैं तो सप्ताह में एक बार उनकी पसंदके हिसाब से भोजन तैयार करें। वे आपकी दिल से सराहना करेंगे। साथ ही लाखों दुआएं भी देंगे।

– बड़े बुजूर्गों की पसंद के गानों की सीडी या डीवीडी उन्हें भेंट कर सकती हैं।

– यदि आपकी सासू मां किताबें पढ़ने के शौकीन हैं तो उन्हें उनकी पसंद की कुछ किताबें भेंट करें। थोड़ा समय निकालकर घर–परिवार के बुजुर्ग सदस्यों के बीच बैठकर उनसे बात करें। उनकी जिंदगी के ऐसे पहलुओं से आप परिचित होंगी, जिनके बारे में आपको अंदाजा भी नहीं होगा। उनके जमाने की बातें सुनकर आप उनके दिल का बोझ भी हल्का कर सकती हैं।

– बच्चों को सिखाइए कि वे अपना कुछ समय दादा–दादी के साथ बिताएं।

– घर के बड़े–बुजूर्गों को साथ लेकर मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे जा सकती हैं। सबके साथ की गई प्रार्थना आपको हमेशा याद रहेगी।

– यदि आपके पास समय है ता किसी अनाथालय या वृद्धाश्रम जाकर वहां कुछ समय बिताएं। वहां लोग अपनों से दूर अपनेपन की तलाश किया करते हैं।

– प्यार से वंचित किसी बच्चे को छोटा सा तोहफा देकर आप उसकी जिंदगी में खुशियों के रंग भर सकती हैं।

बुद्धं शरणम् गच्छामि (बुद्ध पूर्णिमा)

बुद्ध पूर्णिमा या बुद्ध जयंती सारी दुनिया में बौद्धों का सबसे बड़ा त्योहार है। बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था और यही उनकी ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण (मृत्यु) का भी दिन है। यह पर्व वैशाख माह में पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

भगवान बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी नामक स्थान पे हुआ था। बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनके पिता का नाम शुद्धोधन एवं माताजी के नाम मायादेवी था। उनके बारे में प्रचलित है कि एक दिन बुद्ध घर से बाहर निकले तो उन्होंने एक अत्यंत बीमार व्यक्ति को देखा, जब थोड़ा आगे गए तो एक बूढ़े आदमी को देखा तथा अंत में एक मृत व्यक्ति को देखा। इन सब दृश्यों को देखकर उनके मन में एक प्रश्न उठा कि क्या मैं भी बीमार पड़ूंगा, वृद्ध हो जाऊंगा, और मर जाऊंगा? इन प्रश्नों ने उन्हें बहुत ज्यादा परेशान कर दिया था। तभी उन्होंने एक सन्यासी को देखा और उसी समय ही उन्होंने मन ही मन सन्यास ग्रहण करने की ठान ली।

29 वर्ष की उम्र में उन्होंने घर छोड़ दिया और सन्यास ग्रहण कर वे सन्यासी बन गए। महात्मा बुद्ध ने एक पीपल के पेड़ के नीचे ज्ञान की खोज में छः वर्षों तक कठोर तपस्या की जहाँ उन्हें सत्य का ज्ञान हुआ जिसे "सम्बोधि" कहा गया। उस पीपल के पेड़ को तभी से बोधि वृक्ष कहा जाता है। महात्मा बुद्ध को जिस स्थान पर बोध या ज्ञान की प्राप्ति हुई उस स्थान को बोधगया कहा जाता है। महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया था एवं उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की। 483 ई.पू. में कुशीनगर में वैशाख पूर्णिमा के दिन अमृत आत्मा मानव शरीर को छोड़ ब्रह्माण्ड में लीन हो गई। इस घटना को 'महापरिनिर्वाण' कहा जाता है।

बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया है और बौद्ध धर्म के अनुसार चार मुख्य सच्चाइयों (चार आर्य सत्य) को हमेशा याद रखना चाहिए। ये सच्चाइयां ही बौद्ध धर्म के आधार हैं जो निम्नलिखित हैः–

1. संसार में दुःख है।
2. दुःख का प्रमुख कारण तृष्णा (तीव्र ईच्छा) है।
3. दुखों का समुदाय है।
4. दुखों से बचने का उपाय है।

दुःख की समाप्ति के लिए मनुष्य को सद्मार्ग से परिचित होना चाहिए जिसे महात्मा बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग कहा है जिसमें उन्होंने आठ बातों को सम्मिलित किया हैः–

1. सम्यकदृष्टि, 2. सम्यकसंकल्प, 3. सम्यकवाक, 4. सम्यककर्म, 5. सम्यकआजीव, 6. सम्यकव्यायाम. 7. सम्यकस्मृति 8. सम्यकसमाधि

भगवान बुद्ध के अनुसार पवित्र जीवन बिताने के लिए मनुष्य को दोनों प्रकार की अति से बचना चाहिए। न तो उग्र तप करना चाहिए और न ही सांसारिक सुखों में लगे रहना चाहिए, उन्होंने मध्यम मार्ग के महत्व पर बल दिया है। बुद्ध ने ईश्वर और आत्मा दोनों को नहीं माना, वे हमेशा अपने शिष्यों से कहा करते थे कि उन्होंने किसी नये धर्म की स्थापना नहीं की है तथा यह धर्म हमेशा से चला आ रहा है धर्म ही है। उन्होंने अपने विचार लोगों को अपनी ही भाषा (प्राकृत) में समझाया। महात्मा बुद्ध ने बौद्ध संघों की स्थापना की जिसमे सभी जातियों के पुरूष एवं महिलाओं को प्रवेश दिया गया। बौद्ध संघ बहुत ही अनुशासनबद्ध और जनतांत्रिक संगठन थे। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को तीन ग्रंथों में एकत्र किया गया है जिन्हें "त्रिपिटक" कहते हैं। बुद्ध ने जात–पाँत, ऊंच–नीच के भेदभाव तथा धार्मिक जटिलता को गलत बताया है।

गुरू अमरदास जयंती –20 मई

गुरु अमर दास जी का जन्म अमृतसर के बसरका गांव में हुआ था। उनके पिता तेज भान भल्ला जी एवं माता बख्त कौर जी एक सनातनी हिन्दू थे। बचपन से ही गुरु अमरदास भक्ति की राह पर निकल पड़े थे। गुरु अमरदास जी अर्जुन देव जी की गुरुबाणी में गहरी रुचि और श्रद्धा को देखते हुए उन्हें दोहता–बाणी का बोहिथा (यानी नाती वाणी का जहाज) कहा करते थे।

सती प्रथा का अंत – गुरु अमरदास जी ने सती प्रथा का बहुत विरोध किया इसके साथ ही उन्होंने विधवा विवाह को भी बढ़ावा दिया। सती प्रथा के विरोध के साथ उन्होंने महिलाओं को पर्दा प्रथा त्यागने से मना किया।

लंगर परम्परा की शुरूआत – गुरु अमरदास जी समाज में सबको एक समान देखते थे और उनका मानना था कि अगर हम ऊंच–नीच के बीच की दीवार को गिरा दें तो समाज में अधिक प्रेम बढ़ेगा। इसीलिए उन्होंने ऊंच–नीच, छूत–अछूत जैसी बुराइयों को दूर करने के लिये लंगर परम्परा चलाई जहां सभी धर्मों, वर्गों के लोग एक साथ बैठकर भोज करते थे। कहा जाता था कि मुगल शहंशाह अकबर उनसे सलाह लेते थे और उनके जाति–निरपेक्ष लंगर में अकबर ने भोजन ग्रहण किया था।

गुरुपद – गुरु अमरदास पहले एक सादा जीवन व्यतीत करते थे। एक बार उन्हें गुरु नानक जी का पद सुनने को मिला जिसके बाद वह सिखों के दूसरे गुरु अंगद के पास गए और उनके शिष्य बन गए। गुरु अंगद ने 1552 में अपने अंतिम समय में इन्हें गुरुपद प्रदान किया। उस समय अमरदास की उम्र 73 वर्ष की थी।

हालांकि उनको गुरु बनाने का विरोध गुरु अंगद के पुत्र दातू ने किया लेकिन उसकी अपने पिता के सामने एक ना चली।

सिखों के तीसरे गुरु बनने के बाद उन्होंने सिखों का प्रचार विभिन्न स्तरों पर किया और बड़ी मात्रा में लोगों से लंगर का हिस्सा बनने का आह्वान किया। उनके द्वारा उठाए गए कदमों की वजह से ही उस समय सती प्रथा जैसी बुराइयां कम हुई थीं।

आनंद – अमरदास जी की प्रसिद्ध रचना "आनंद" आपको अक्सर सिख उत्सवों में सुनाई दे जाएगी। इन्हीं के आदेश पर चौथे गुरु रामदास ने अमृतसर के निकट –संतोषसर नाम का तालाब खुदवाया था जो अब गुरु अमरदास के नाम पर अमृतसर के नाम से प्रसिद्ध है।

मृत्यु–1 सितम्बर, 1574 को अमृतसर में गुरु अमरदास ने आखिरी सांसें लीं। आज भी उनके द्वारा शुरू की गई लंगर प्रथा सिख समुदाय की अहम विशेषता है।

प्रवचन

व्यक्ति को गृहस्थ धर्म के बाद वानप्रस्थ आश्रम को अपनाना चाहिए, क्योंकि वन बनने की प्रयोगशाला है। जो वन गया सो बन गया, जो भवन में अटक गया, वो लटक गया।

मुनि श्री ने घर को मरघट बताते हुए कहा कि जहां प्राण जाए घट, वह है मरघट। जहां आदमी के शव को जलाया जाए, वह श्मशान होता है। दुनिया में एक मरघट ही है, जहां व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से नहीं जाता, उसे बांधकर ले जाना पड़ता है। भवन में रहो पर श्रद्धा सही बनाओ। आदमी जीवनभर धन–धन करता रहता है, जबकि मृत्युपरान्त शोक पत्रिका में निधन रह जाता है।

– मुनि श्री तरूण सागर जी

मानव मन के बोल

वसुधैव कुटुम्बकम के भावों के साथ

गतांक से आगे.....

अच्छा –अच्छा बावजी आजो –आजो, आप तो मोटा आदमी हो। मैंने कहा–मोटा आदमी नहीं हूँ, मेरे गाँव में कोई मोटे आदमी ने जन्म लिया क्या? तो सरपंच–पंच ने मीटिंग बुलाई, निर्णय लिया और कहा–हमारे यहाँ बच्चे ही पैदा हुए हैं, वो माताजी के गर्भ से छोटे–छोटे बच्चे थे, बोल भी नहीं सकते थे।

भूख लगती तो रो लेते थे। भगवान के सामने भी रो लिया करें, भगवान परम् पिता हैं–परम् माता हैं। दूसरे दिन मैं फिर गया तो वो इन्तजार कर रहे थे। करीब 40 बेड पर मैं गया, आनन्द की लहरें बाँटी। एक पुस्तक बाबुजी को देने लगा। उन्होंने कहा–बाबूजी, मैं तो पढ़ा लिखा नहीं हूँ। आप पुस्तक दे रहे हो, पर मैं पढ़ नहीं सकता। क्या करें बाबूजी ? गाँव में खेती का काम करना पड़ता है, पढ़ने जाएँ तो रोटी खाने को कौन देवे ? मैं तो पढ़ा ही नहीं–बाबूजी!

मेरे पास एक पुस्तक थी गीता प्रेस की, पूरी पुस्तक में सीता–राम–2 ही लिखा था। मैंने उनको एक पेन्सिल दी और कहा बोलो, सीता–राम बोलो। मैंने कहा अक्षर देखते जाना, एक बार पेन्सिल को आगे रखते जाना। ओह यह बात तो बढ़िया है, सीता–राम तो बोलूँगा। सीता–राम साथ है तो डरने की क्या बात है।

बाबूजी उन्होंने मुझे एक भजन सुनाया–

सीता–राम, सीता–राम, सीता–राम कहिये।
जाहिं विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये।।(39)

देखो बाबूजी, कभी नकलीपन नहीं करना, कभी बनावटीपन नहीं करना। हमारा सत्संग चल रहा था। सरलता, सहजता, सज्जनता और समभाव, जैसे हैं वैसे सरल, यथावत, तथावत, तटस्थ भाव से देखें। कहते हैं दृष्टा भाव से देखें। हम देखें रहे है, लेकिन हम कर नहीं रहे हैं।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

जिस प्रकार जीवन के सम्यक् निर्वाह के लिए जीवन को एक सुनिश्चित दिशा की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार जीवन की उपलब्धियों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी वासनाओं और इच्छाओं पर नियंत्रण करे और मिल बाँटकर खाने में प्रसन्नता का अनुभव करे, परन्तु हम ऐसा नहीं करते हैं। यही कारण है कि हम न तो अपनी उपलब्धियों द्वारा सम्यक् रूपेण लाभान्वित हो पाते हैं और न उनको स्थायित्व प्रदान कर पाते हैं। इस प्रवृत्ति से उत्पन्न जीवन की आपा–धापी गलाकाट प्रतियोगिता एवं सर्वभक्षी जीवन पद्धति ने हमको अर्थ पिशाच एवं कामांध नर–पशु की कोटियों में खड़ा कर दिया है तथा मानवीय मूल्यों के प्रति हमारा किसी प्रकार लगाव नहीं रह गया है। किसी श्रेष्ठ जन ने उचित परामर्श दिया है कि हम यदि साधन का ध्यान रखकर ठीक प्रकार काम करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनेक प्रतियोगी केवल इस कारण सफलता का वरण नहीं कर पाते हैं क्योंकि वे अपने लक्ष्य को निर्धारित करते समय उपलब्ध साधनों पर विचार नहीं करते हैं। हमें अपनी सामर्थ के अनुसार साधन जुटाने पर विचार करना चाहिए और उनके परिप्रेक्ष्य में अपने प्रातव्य निर्धारित करने पर विचार करना चाहिए। हमारा लक्ष्य सह अस्तित्व मात्र न होकर सह जीवन होना चाहिए। हमारे विचार से सह अस्तित्व पर केन्द्रित विचारधारा ने हमें अन्य प्राणियों के योग–क्षेत्र के प्रति उदासीन ही नहीं, बल्कि पूर्णतः स्वार्थबद्ध भी बना दिया है। ''मेरा पेट हाऊ और मैं न देउँ काउ'' कथन पर आधारित व्यक्ति अधिकतम भोजन करना चाहता है, जिससे वह इस सन्तोष की अनुभूति कर सके कि उसने अन्य व्यक्ति के हिस्से के भोजन का भी उपभोग कर लिया है। प्रचलित प्रवाद के अनुसार गधे को वैशाखनन्दन कहते हैं क्योंकि चारों ओर सूखी भूमि देखकर वह इस संतोष की अनुभूति करता है कि उसने सब घास उदरस्थ कर ली है। वृहद स्तर पर यह प्रवृत्ति आर्थिक शोषण के रूप में दिखाई देती है। यह प्रवृत्ति भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती आदि समाज विरोधी दृष्कृत्यों को जन्म देती है। जो व्यक्ति सब कुछ हड़प लेने को प्रत्यत्नशील बने रहते हैं, वे सदैव आशंका, भय एवं दुराव–छिपाव का जीवन व्यतीत करने को विवश होते हैं क्योंकि उनकी उपलब्धियाँ श्रम की सुदृढ़ शिला पर स्थापित नहीं होती है।

अतः जिस समाज से हम कुछ प्राप्त करते हैं, उसका ऋण चुकाने का प्रयत्न हमें अवश्य करना चाहिये। ऐसी सोच रखने वाला व्यक्ति जीवन में निरन्तर आगे की ओर बढ़ता जाता है– पूर्व स्थिति को प्राप्त होकर दुःख एवं अपमान भोगने की आशंका उसको नहीं सताती है।

सुविचार

इंसान को बोलना सीखने में 3 साल लग जाते हैं
लेकिन क्या बोलना है ये सीखने में पूरी ज़िंदगी लग जाती हैं.

जेबा के दिल का सफल ऑपरेशन

उदयपुर, बिहार, गया जिले के गाँव घोरा घाट मे रहने वाले माशुक अली की पुत्री जेबा अन्जूम (11) के दिल में छेद होने से हाल ही में नारायण सेवा संस्थान द्वारा उसका ऑपरेशन करवाया गया जो सफल रहा। अब जेबा सामान्य बच्चों की तरह जिन्दगी जी सकेगी। इतना ही नही, वह दूसरे बच्चों के साथ खिलखिला कर हस भी सकेगी। बच्ची के पिता माशुक अली घर पर ही प्राइवेट टयूशन पढ़ाकर सात सदस्यीय परिवार का पोषण करते है। जेबा जन्म से ही बीमार रहती थी। तब इसे अस्पतालों में दिखाया गया, लेकिन दवा से कोई लाभ नही हुआ। समय बीतता गया, और धीरे–धीरे जेबा ने खाना–पीना भी कम कर दिया, फिर अस्पतालो मे दिखाकर इलाज तो हुआ पर राहत नही मिली कुछ अरसे बाद सांस लेने में भी तकलीफ होने लगी। इस पर उसे जयपुर के नारायण हृदयालय मे बताया, यहां डॉक्टरो ने जांच कर बताया कि दिल में छेद होने के कारण तुरन्त ऑपरेशन की सलाह दी, और कहा कि अब भी शीघ्रता नहीं की गई तो सासों की ड़ोर कभी भी टुट सकती है। जिसका खर्च करीब डेढ़ लाख बताया, यह खर्च इस परिवार के लिए संभव नही था। तब इन्हें टी.वी द्वारा नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी मिली। पिता माशुक अली ने संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल से सम्पर्क कर उन्हें स्थिति से अवगत कराया। इस पर श्री अग्रवाल ने बच्ची की हालत को देखते हुए तुरन्त उपचार के लिए नारायण हृदयालय भिजवाया और ऑपरेशन व दवा की सम्पूर्ण व्यावस्था निःशुल्क करवाई। श्री अग्रवाल ने बताया कि जेबा अब बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न है।

दुर्व्यसनों का सरताज –आलस्य

हानिकारक दुर्व्यसनों को ठंडी आग कहा जाता है। गरम आग में जलकर भस्म हो जाने में देर नहीं लगती, पर पानी में डूब मरने से भी दुष्परिणाम वैसा ही भयंकर दृश्य रोमाचंकारी लगता है और दर्शकों की आँखों में काफी देर तक दहलाने वाला दृश्य खड़ा किए रहता है। जबकि पानी में किसी के डूबने का समाचार सुनकर जरा–सी ही प्रतिक्रिया होती है। इन पर भी दुःखद परिणीति दोनों को ही एक जैसी होती है। जिसका प्राण गया, उस बिछोह का जिन पर प्रभाव पड़ा वे दोनों ही स्थितियों समान रूप से कष्ट सहते हैं।

दुर्व्यसनों को ठंडी आग जैसा ही कहा गया है क्योंकि वे देर–सबेर में उतनी ही हानि पहुँचाते हैं, जितने की अग्निकांड, आक्रमण, प्राणहरण जैसे तत्काल विनाश दृश्य प्रस्तुत करने वाले संकट। कुल्हाड़ी से किसी मजबूत शहतीर को कुछ ही देर में काटकर धराशायी किया जाता, इसी कार्य को उसके भीतर घुसा हुआ धुन, थोड़ा अधिक समय लेकर पूरा करता है। खोखला हो जाने पर शहतीर बिना कुल्हाड़ी की चोट सहे ही जमीन पर गिरता और सड़े–गले ईंधन की तरह प्रयुक्त होता है। किसी को गोली से मार देना और रक्त में विष का प्रवेश कर देने पर धीमी मौत का उपक्रम करना, विवेचकों के लिए हलके–भारी हो सकते हैं, पर दोनों ही परिस्थितियों में रक्तभोगी को प्रायः समान दुष्परिणाम ही सहन करना पड़ता है।

दुर्व्यसनों में नशेबाजी, चटोरापन, जुआ, व्यभिचार, आवारागर्दी आदि की चर्चा आमतौर से होती रहती हैं। उनकी हानियाँ भी समझी–समझाई जाती हैं, एक दुर्व्यसनों का सरताज ऐसा है जिसकी ओर से चित्त और आँखें बंद किए रहते है और दोनों ही उसके कारण अपार हानि सहते हैं।

इस दुर्व्यसन का नाम है –आलस्य। आलस्य का अर्थ है, श्रम से जी चुराना। इस कारण सामर्थ्य और साधन, अवर रहते हुए भी मनुष्य उन सफलताओं से वंचित रह जाता है, जो समय और श्रम का सुनियोजन करने पर सहज ही उपलब्ध हो सकती थी। 'पिछड़े लोगों में से अधिकांश का दुर्गुण, आलस्य ही पाया जाता है। आलस्य और दारिद्रय को सहोदर भाई माना गया है, दोनों अभिन्न्ज्ञ मित्र हैं। एक के बिना दूसरे को चैन नहीं पड़ता। आलसी समय गँवाता रहता है। साथ ही उन उपलब्धियों से भी हाथ धोता रहता है, जों उतनी देर परिश्रमरत रहने पर सहज ही हस्तगत हो सकती थी।'

समय ही जीवन है। भगवान इसी रूप में मनुष्य को अभीष्ट वैभव, सौभाग्य का अवसर प्रदान करता है। जिसने अपने समय का सुनियोजित उपयोग कर लिया, समझा जा सकता है कि दैवी अनुग्रह का भरपूर लाभ उठा लिया। ऐसे अनेक लोग हुए हैं जो कि कम समय जीवित रहे, किंतु उस अवधि का समुचित सदुपयोग करके इतना लाभ उठा सके, जितना कि शतायु लोगों को भी हस्तगत नहीं होता। मनोयोग समेत किया गया परिश्रम प्रगति और संपत्ति का ऐसा सुयोग उपस्थित करता है, जिसे सामान्य जन दैवी–वरदान या सौभाग्य चमत्कार ही कह सकते हैं।

सामाजिक या राष्ट्रीय प्रगति का स्वरूप कुछ भी क्यों न हो, उसके मूल कारण उसके घटक सदस्यों की कर्मठता ही काम कर रही होती है। जहाँ लोगों पर आलस्य प्रमाद चढ़ा होगा समझना चाहिए कि वहाँ पक्षाघात जैसी विपत्ति चढ़ी होगी। विकलांगों अपंगों के दुर्भाग्य पर आँसू बहाए जाते हैं, पर सच्चे अर्थों में अभागे वो हैं, जिसने आलस्य का दुर्व्यसन अपनाया। उपयोगी, योजनाबद्ध परिश्रम से जी न चुराकर समय का सदुपयोग करना सीखिए।

सेवा–आमंत्रण
पुरातन, वैदिक एवं शाश्वत नगरी– महाकाल की पावन धरा पर
अध्यात्म
सिंहस्थ कुम्भ महापर्व-2016
30 दिवसीय भक्ति–शक्ति एवं सेवा–अध्यात्म पर्व
नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट), उदयपुर
सहायतार्थ
शिव विवाह कथा

कैलाश 'मानव'
चेयरमेन संस्थापक

कथा व्यास
पुज्य विनोद बंतुलेजी

प्रशान्त अग्रवाल 'सेवक'
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
दिनांक – 19 से 21 मई, 2016
समय – सांय. 7.00 बजे से रात्रि 10.30 बजे तक
पर्व स्थल– प्लॉट नं. 83/17-22, आगर रोड़, उन्हेल नाका, खिलचीपुर, सेक्टर-5, मंगलनाथ, उज्जैन (म.प्र.)
संपर्क सूत्र – 0294-6622222,3990000, 96494-99999 Fax : 0294-2464445
Web: www.nsskumbh.org, E-mail: info@narayanseva.org
www.narayanseva.org
निवेदक
कैलाश "मानव" संस्थापक चेयरमैन
कमला देवी सहसंस्थापिका
प्रशान्त अग्रवाल 'सेवक' अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
वंदना अग्रवाल निदेशक
जगदीश आर्य, ट्रस्टी एवं निदेशक
देवेन्द्र चौबीसा, ट्रस्टी एवं निदेशक
भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहूति आपकी भी, कृपया सपरिवार पधारें।

कलम की महिमा

कलम गुलाब की –
कलम यदि गुलाब की गमले में लगायेंगे
जड़ फलेगी गमले में, तब पत्ते उसमें आयेंगे
विकसित होगी कलम, पौधा तक बढ़ जायेगा
इस पौधे का तन तो, सारा काटों से भर जायेगा
पुष्प आने पर माली, तोड़ उसे वो ले जायेगा
उसका तन तो सदा, काटों से भरा रह जायेगा
कलम तनव की –
कलम यदि तनाव की, अपने भेजे में लगाओगे
जड़ फैलेगी भेजे में, खोपड़ी को भारी पाओगे
शूल बन चुभने लगेगे, हंसी से दूर हो जाओगे
खुशियां होगी चूर चूर, दुःख से भर जाओगे
कलम कर्ज की –
कलम गर एकवार, भूले से लगाली कर्ज की
कन्ट्रोल उस पर रखनाही, बेल बढ़ेगी मर्ज की
स्टेण्डर्ड जब बढ़ता है, खर्चा भी बढ़ जायेगा
कर्ज चुकाने का पैसा, बताओ कहा से आयेगा
भवन में जड़ा तो सोना चांदी, पलंग बनवाया ही चंदन का
नींद नही ले पाओगे नादान, विस्तर चाहे मखमल का
कलम मर्ज की –
यदि एक बार बदन में, कलम लग जायेगा मर्ज की
उपचार सुचारू हो ना पाये, जड़ फेलेगी मर्ज की
गर जड़ जमा ली मर्ज ने, शरीर खोखला हो जायेगा
गोली केप्सूल भोजन बने, सूईयों से बदन छिद जायेगा
खुशियां उसके जीवन की नादान कही खो जाये
रात की नींद दिन का चैन, कभी उसे ना मिल पाये
कलम फर्ज की –
दबाव पड़ेगा भेजे पर, लालच भी बढ़ जायेगा
उल्टा पुलटा करने का, मर्ज नया लड़ जायेगा
बचते बचते घर एक दिन कही फँस जायेगा
नादान सारा स्टैन्डर्ड, धरा यहीं रह जायेगा
कर्ज और मर्ज बढ़ते ही, ऐसा कुछ करना होगा
कोताही ना बरत फर्ज में, वरना दुख पाना होगा।

व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

गतांक से आगे....

यूं ना हम आलस्य में बैठें,
जिस्म से कुछ काम लें।
हाथों से खिदमत करें,
मुंह से प्रभु का नाम लें।(39)

कहां भूल गये? ये कुलदागी, कुचाली, कुलकलंकी, खाउमल, पेटूमल, शराबीमल, धोखामल, कठोरतामल, क्रोधमल ये दुश्मन हैं धर्म के, हमारे दिमाग में प्रवेश ना कर जावे। प्रातःकाल उठकर क्या करना बाबूड़ा?मन को शान्त रखने के लिये शान्त चित्त से पलकों को बन्द करके अपने आपको देखना चाहिए। मेरा ये पिण्ड ब्रह्माण्ड है, मेरा आज्ञा चक्र, विवेक चक्र जागृत रहना चाहिए। किसी पर गुस्सा आवे, एक–दो मिनट का रखना, वो भी नकली गुस्सा रखना, बार–बार मन में गुस्से को बिठाना पड़ता है।

पहला स्टेशन बचपन का
लगता सबको प्यारा है।
खेल खिलौने खेल रहा तूं,
देखा एक नजारा है,(40)
खेल–खेल में रमा रहा तूं,
गाड़ी आगे निकल गई।
रेल चली रे भैय्या रेल चली,
इस जीवन की रेल चली।(41)

आप अपने बच्चों को कहिये और आप खुद भी अच्छे सदसाहित्य का स्वाध्याय कीजिये। कहा है– स्वाध्यायो नः प्रमदः। स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना, प्रमाद का मतलब है लापरवाही करना। आप जहाँ भी सेवा कर रहे हो, पूरा मन लगा दीजिये। अपने मस्तिष्क के आज्ञाचक्र से, अपने कण्ठ के विशुद्धि चक्र से अपने चरित्र को उजला रखिये, छोटी–छोटी बातों के लिए मूर्खता कर लेते हैं।

<u>तर्जः–तेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमना</u>

हम सुधरेंगे युग सुधरेगा।
केवल नारा लगाणे कुछ न करेगा।
हम बदलेंगे युग बदलेगा।
केवल यह आवाज नहीं है।।
मानव मात्र है एक सरीखे।
यह केवल उद्घोष नहीं है।
नर नारी सब एक सरीखे।
शब्द ये केवल कथा नहीं है।।(42)

ये पक्का धर्म का बड़ा स्तम्भ है, भेद–भाव मत करना। भेद–भाव करोगे बाबूड़ा तो दुखी हो जाओगे, पापी हो जाओगे, अधर्मी हो जाओगे। क्या है अधर्मी होना?मनुष्य – मनुष्य में भेद किया, शर्म नहीं आई। बड़े–बड़े लोगों ने छोटे गरीब को पीट दिया, मार डाला, कोड़े मार दिये, बेचारे को भूखा रखा, उसकी थाली छीन ली। उसके घर को ध्वस्त करने का पाप कर दिया, उसके ऊपर झूठा मुकदमा दर्ज करा दिया, कितनी मूर्खता है? ओ मेरे धर्म के वाहक, ओ मेरे भाइयों – बहनो, ओ मेरे भारत के 125 करोड़ लाड़ले बहन – भाइयों जाग जाईये विवेकानन्द जी ने कहा – उठो जागो, बोधि को प्राप्त हो।

उठ नर अम्बर छू जरा,
खोल गगन के द्वार।।

ये मानव धर्म है, मानव धर्म भेद–भाव का अन्त करता है। अरे खून चाहिये तब तो किसी भी जाति का हो, अरे तूं क्यों जाति पूछ रहा भाई, देर मत कर कणी भी जाति को खून ले आव और बाकी तूं किण जाति रो है ? अरे हम मनुष्य जाति के हैं, मानव जाति के हैं, इनसान जाति के हैं। जीवन एक उलझन है, कहीं धोखा, कहीं ठोकर, कोई रोता है गिर–गिर कर, कोई हंसता है उठ–उठ कर, जो गिर कर फिर सम्भल जाये, उसे इन्सान कहते हैं।

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सलाहकार प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, सिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, सिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com